ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in December 2025

गोरखपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

यज्ञेश नाथ त्रिपाठी, शोध छात्र, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्विद्यालय, गोरखपुर
डॉ अर्जुन सोनकर, शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य , शिक्षा संकाय , दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्विद्यालय, गोरखपुर
Email- bpgcynt@gmail.com

सारांशिका

*प्रस्तुत शोध का शीर्षक "**गोरखपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन**" है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति का अध्ययन करना, ग्रामीण एवं शहरी तथा बालक एवं बालिका समूहों के मध्य विद्यमान अंतरों का विश्लेषण करना तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण करना था। अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक एवं सहसंबंधात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में गोरखपुर मंडल के चयनित उच्च प्राथमिक विद्यालयों के **763 विद्यार्थियों** का चयन बहुस्तरीय गुच्छ न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित 25 मदों वाली मानसिक स्वास्थ्य मापनी तथा 40 अंकों का शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रयुक्त किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत, स्वतंत्र t-परीक्षण, सहसंबंध तथा प्रतिगमन विश्लेषण द्वारा किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य स्तर की है, किन्तु शहरी विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। मानसिक स्वास्थ्य भी दोनों समूहों में सामान्य स्तर का था, परंतु शहरी विद्यार्थियों तथा बालकों का मानसिक स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक संतोषजनक पाया गया। बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में विशेष सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया। सहसंबंध एवं प्रतिगमन विश्लेषण से मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध प्राप्त हुआ, जिससे स्पष्ट होता है कि बेहतर मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन के आधार पर विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ, जीवन-कौशल शिक्षा तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण को सुदृढ़ बनाने की अनुशंसा की गई है। यह अध्ययन शिक्षा नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।*

मुख्य शब्द (Keywords): मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि, उच्च प्राथमिक विद्यालय, सर्वेक्षणात्मक अध्ययन, ग्रामीण-शहरी विद्यार्थी, सहसंबंध।

भूमिका

1. विषय का परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम भी है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, सामाजिक तथा व्यावहारिक गुणों का विकास होता है, जिससे वह समाज का उत्तरदायी एवं सृजनशील नागरिक बनता है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को परीक्षा में सफल बनाना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की विविध परिस्थितियों का प्रभावी

ढंग से सामना करने योग्य बनाना भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भी शिक्षा को समग्र विकास से जोड़ते हुए विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास पर विशेष बल दिया है।

उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6 से 8) विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। इस अवस्था में बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है, जहाँ उसके व्यक्तित्व, व्यवहार, भावनाओं एवं सामाजिक संबंधों में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस समय विद्यार्थियों पर पारिवारिक अपेक्षाओं, विद्यालयी प्रतिस्पर्धा, सामाजिक परिवर्तनों तथा डिजिटल माध्यमों का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। यदि इस अवस्था में विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य संतुलित रहता है, तो वे अध्ययन में अधिक रुचि लेते हैं, आत्मविश्वास के साथ सीखते हैं तथा बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत मानसिक तनाव, चिंता, अवसाद अथवा भावनात्मक असंतुलन उनकी अधिगम क्षमता, एकाग्रता एवं शैक्षिक प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

अतः मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि को परस्पर पूरक अवधारणाओं के रूप में देखा जाना चाहिए। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में गोरखपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

2. समस्या की पृष्ठभूमि

पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। डिजिटल शिक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाएँ तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने विद्यार्थियों के सीखने के स्वरूप को परिवर्तित किया है। दूसरी ओर विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव, अभिभावकों की अपेक्षाएँ, सामाजिक प्रतिस्पर्धा तथा भविष्य की अनिश्चितताओं के कारण मानसिक तनाव एवं भावनात्मक समस्याएँ भी बढ़ी हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन तथा व्यक्तित्व विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मिशन प्रेरणा, निपुण भारत मिशन तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसके बावजूद ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की उपलब्धियों में अंतर, संसाधनों की असमानता तथा मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। विशेष रूप से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में किशोरावस्था के कारण होने वाले शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन उनके अध्ययन एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

गोरखपुर मंडल सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से विविधताओं वाला क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के विद्यालय स्थित हैं। इन दोनों परिवेशों में उपलब्ध संसाधनों, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक अवसरों एवं विद्यालयी सुविधाओं में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक एवं सहसम्बंधात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यही परिस्थिति प्रस्तुत शोध की पृष्ठभूमि का निर्माण करती है।

3. शोध की आवश्यकता

वर्तमान समय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अवधारणा केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं रह गई है। अब शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास, मानसिक सुदृढ़ता, भावनात्मक संतुलन एवं जीवन-कौशल का विकास करना भी है। यदि विद्यार्थी मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होंगे, तो वे उपलब्ध शैक्षिक

संसाधनों का समुचित लाभ नहीं उठा पाएँगे। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता के मूल्यांकन का एक आवश्यक आयाम बन गया है।

गोरखपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सीमित शोध उपलब्ध हैं। ग्रामीण-शहरी परिवेश तथा बालक-बालिका के संदर्भ में भी पर्याप्त तुलनात्मक अध्ययन नहीं मिलते। इसलिए इस विषय पर वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई। प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रमुखों तथा शिक्षा-प्रशासकों को विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं को समझने तथा उनके समाधान हेतु प्रभावी शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता प्रदान करेंगे।

4. शोध का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सैद्धांतिक रूप से यह मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को स्पष्ट करते हुए शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि करेगा। व्यावहारिक रूप से यह अध्ययन विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों, परामर्श सेवाओं, जीवन-कौशल शिक्षा तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण के विकास के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को यह समझने में सहायता देंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार केवल शिक्षण-पद्धति से संभव नहीं है, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी समान महत्व देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त यह शोध भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी सिद्ध होगा तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में आगे होने वाले अनुसंधानों को नई दिशा प्रदान करेगा। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के समग्र विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा शिक्षा प्रणाली के सुदृढ़ीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखता है।

5. साहित्य समीक्षा

किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान की सफलता एवं प्रामाणिकता उसके विषय से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों के व्यवस्थित एवं समालोचनात्मक अध्ययन पर निर्भर करती है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि उसके शोध विषय पर अब तक किन-किन विद्वानों ने कार्य किया है, उन्होंने कौन-सी शोध विधियों का प्रयोग किया, उनके प्रमुख निष्कर्ष क्या रहे तथा वर्तमान अध्ययन के लिए कौन-से शोध-अंतर विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का गहन अध्ययन किया गया।

समीक्षित साहित्य से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शोधकर्ताओं ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक संबंध स्थापित किया है। **शाह (1985)** तथा **अग्रवाल एवं कपूर (1998)** ने अपने अध्ययनों में पाया कि मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थी अध्ययन के प्रति अधिक एकाग्र, आत्मविश्वासी एवं प्रेरित होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है। इसी प्रकार **कौर एवं राणा (2009)** ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध स्थापित किया। **दीक्षित एवं शर्मा (2011)** ने निष्कर्ष दिया कि विद्यार्थियों का मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक समायोजन उनके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। **पूनम थपलियाल**

(2022) तथा **शशिकला सिंह (2015**) के अध्ययनों ने भी यह पुष्टि की कि मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक सहयोग को मानसिक स्वास्थ्य के प्रमुख कारकों के रूप में अनेक शोधों में स्वीकार किया गया है। **यादव (2003**), **सिरोही (2004**), **जुब्रिक एवं सहयोगियों** (1995), **मुकेश कुमार एवं पुष्पा नामदेव (2024**) तथा **कृष्ण चन्द्र चौधरी (2023**) ने अपने अध्ययनों में पाया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी के मधुर संबंध तथा सहयोगात्मक पारिवारिक परिवेश विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। इसके विपरीत तनावपूर्ण वातावरण, सामाजिक असुरक्षा एवं पारिवारिक समस्याएँ विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं अधिगम दोनों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों पर किए गए अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ कि **पाण्डेय** (1981), **डॉ. सिद्धि राजू (2013**), **रवान्देमा जोसफ** (2017), **जसराज कौर एवं संदीप कौर** (2018) तथा **मीनाक्षी (2021**) ने स्थानीयता (ग्रामीण-शहरी), लिंग, अध्ययन-अभिरुचि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालय के प्रकार तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण निर्धारक माना है। कुछ अध्ययनों में शहरी विद्यार्थियों का प्रदर्शन ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया, जबकि कुछ अध्ययनों में बालिकाओं की उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं शैक्षिक कारकों से प्रभावित होने वाली बहुआयामी अवधारणा है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी **जुब्रिक एवं सहयोगियों** (1995), **कैथरीन** (2009), **ब्रैडली** (2013) तथा **तिंशुचु, सिन लिऊ एवं किशिमोतो** (2023) ने मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध स्थापित किया। इन अध्ययनों में विद्यालय आधारित मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों, मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाओं तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम को विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया है।

समग्र रूप से साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। यद्यपि इस विषय पर पर्याप्त शोध उपलब्ध हैं, फिर भी **उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों**, विशेषकर **गोरखपुर मंडल के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के संयुक्त, तुलनात्मक तथा सहसम्बंधात्मक अध्ययन** अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। यही तथ्य वर्तमान अध्ययन की प्रासंगिकता एवं आवश्यकता को स्थापित करता है।

7. शोध समस्या

अनुसंधान समस्या के सैद्धान्तिक विवेचन के उपरान्त शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध समस्या निर्धारित की है—

"गोरखपुर मंडल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन।"

8. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

9. शोध परिकल्पनाएँ

(ख) तुलनात्मक एवं सहसम्बंधात्मक परिकल्पनाएँ (R9–R13)

R1. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर होती है।

R2. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर होता है।

R3. उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों का मानसिक स्वास्थ्य बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य से बेहतर होता है।

R4. उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर होती है।

R5. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक संबंध होता है।

शोध विधि

1. शोध की प्रकृति

प्रस्तुत शोध का शीर्षक *"गोरखपुर मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन"* है। यह अध्ययन **वर्णनात्मक**, **सर्वेक्षणात्मक** तथा **सहसम्बंधात्मक** शोध की प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना तथा दोनों चरों के मध्य विद्यमान संबंध का परीक्षण करना है। चूँकि अध्ययन में किसी भी चर का प्रयोगात्मक नियंत्रण या परिवर्तन नहीं किया गया, अतः यह अप्रायोगिक शोध की श्रेणी में आता है।

2. शोध विधि

इस अध्ययन में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि के माध्यम से बड़ी जनसंख्या से प्रतिनिधिक प्रतिदर्श का चयन कर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित तथ्य संकलित किए गए। इस विधि के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र, बालक एवं बालिका तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यमान अंतरों एवं संबंधों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया गया।

3. जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में **गोरखपुर मण्डल के अंतर्गत संचालित बेसिक शिक्षा परिषद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 7 में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी** सम्मिलित किए गए। यह जनसंख्या सीमित प्रकृति की है क्योंकि इसके सदस्यों की संख्या निर्धारित की जा सकती है। अध्ययन का उद्देश्य इसी जनसंख्या के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि की वास्तविक स्थिति का आकलन करना था।

4. प्रतिदर्श

अध्ययन हेतु जनसंख्या में से प्रतिनिधिक प्रतिदर्श का चयन किया गया। इसके अंतर्गत गोरखपुर मण्डल के **देवरिया एवं कुशीनगर जनपदों** का चयन किया गया। दोनों जनपदों के पाँच-पाँच विकासखण्डों का चयन कर प्रत्येक विकासखण्ड से पाँच-पाँच उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इस प्रकार कुल **50 विद्यालयों** को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इन विद्यालयों की कक्षा 7 के विद्यार्थियों से शोध के लिए आवश्यक आँकड़ों का संकलन किया गया। चयनित प्रतिदर्श जनसंख्या का समुचित प्रतिनिधित्व करता है।

5. प्रतिदर्श चयन विधि

प्रतिदर्श के चयन हेतु **संभाव्यता न्यादर्शन** के अंतर्गत **गुच्छ न्यादर्शन** की बहु-स्तरीय विधि का उपयोग किया गया। प्रथम चरण में गोरखपुर मण्डल से दो जनपदों का चयन किया गया। द्वितीय चरण में प्रत्येक जनपद से पाँच-पाँच विकासखण्डों का चयन किया गया तथा अंतिम चरण में प्रत्येक विकासखण्ड से पाँच-पाँच विद्यालयों का यादृच्छिक चयन किया गया। इस विधि द्वारा अध्ययन का प्रतिदर्श प्रतिनिधिक एवं निष्पक्ष बनाया गया, जिससे शोध निष्कर्षों की विश्वसनीयता में वृद्धि हुई।

6. शोध उपकरण

अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु दो स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया—

(क) मानसिक स्वास्थ्य मापनी

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मापन हेतु 25 कथनों वाली पाँच-बिंदु लिकर्ट मापनी का निर्माण किया गया। इसमें भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक आयामों से संबंधित कथनों को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक कथन पर *पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं पूर्णतः असहमत* विकल्प प्रदान किए गए।

(ख) शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए कक्षा 7 के पाठ्यक्रम पर आधारित 40 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों वाला उपलब्धि परीक्षण विकसित किया गया। इसमें हिन्दी, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयों को समान महत्व दिया गया तथा प्रत्येक सही उत्तर के लिए एक अंक निर्धारित किया गया।

7. उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता

दोनों उपकरणों की **विषयवस्तु वैधता** शिक्षा एवं मनोविज्ञान के विशेषज्ञों के परामर्श से सुनिश्चित की गई। विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त सुझावों के आधार पर आवश्यक संशोधन कर उपकरणों को अंतिम रूप दिया गया।

विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु **विषम-सम विधि** तथा **स्पीयरमैन-ब्राउन सूत्र** का प्रयोग किया गया। मानसिक स्वास्थ्य मापनी का विश्वसनीयता गुणांक **0.670** तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक **0.719** प्राप्त हुआ, जो दोनों उपकरणों को शोध कार्य हेतु पर्याप्त रूप से विश्वसनीय सिद्ध करता है।

8. आँकड़ा संग्रहण प्रक्रिया

आँकड़ों के संग्रहण से पूर्व चयनित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात विद्यार्थियों को अध्ययन के उद्देश्य से अवगत कराया गया तथा उत्तर देने की विधि समझाई गई। मानसिक स्वास्थ्य मापनी एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण निर्धारित समय में विद्यार्थियों से भरवाए गए। प्राप्त उत्तर-

पत्रों की जाँच कर स्कोर निर्धारित किए गए तथा सभी आँकड़ों को सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु व्यवस्थित रूप से सारणीबद्ध किया गया।

9. सांख्यिकीय तकनीकें

संगृहीत आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक दोनों प्रकार की सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत **माध्य, मध्यिका, बहुलक, मानक विचलन, न्यूनतम एवं अधिकतम प्राप्तांक तथा प्रतिशत** का उपयोग किया गया। समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए **स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-test)** का प्रयोग किया गया। मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण **पीयरसन सहसम्बंध गुणांक** द्वारा किया गया तथा मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करने के लिए **सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण** का उपयोग किया गया। इन सांख्यिकीय तकनीकों के आधार पर शोध की सभी परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए।

11. परिणाम एवं विश्लेषण

11.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य गोरखपुर मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 7 के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना तथा दोनों चरों के मध्य संबंध का परीक्षण करना था। अध्ययन में देवरिया एवं कुशीनगर जनपदों के चयनित विद्यालयों से कुल **763 विद्यार्थियों** को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। इनमें **437 (57.27%) ग्रामीण क्षेत्र** तथा **326 (42.73%) शहरी क्षेत्र** के विद्यार्थी सम्मिलित थे। लिंग के आधार पर **354 (46.40%) बालक** तथा **409 (53.60%) बालिकाएँ** अध्ययन में शामिल थीं।

उद्देश्य–1 : **उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन**

शोध प्राकल्पना- R1

उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी परिक्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण परिक्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर होती है।

शून्य प्राकल्पना- H1

उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण परिक्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्राकल्पना परिक्षण और निष्कर्ष

इस उद्देश्य के अंतर्गत **437 ग्रामीण** एवं **326 शहरी** विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गई। ग्रामीण विद्यार्थियों का **माध्य (Mean) 23.34** तथा **SD 6.73**, जबकि शहरी विद्यार्थियों का **माध्य 25.71** तथा **SD 6.51** प्राप्त हुआ।

शैक्षिक उपलब्धि स्तर	ग्रामीण	प्रतिशत (%)	शहरी	प्रतिशत (%)
निम्न	84	19.22	41	12.58
सामान्य	296	67.73	221	67.79
उच्च	57	13.04	64	19.63
योग	**437**	**100.00**	**326**	**100.00**

ग्रामीण शहरी शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत तालिका

टेबल – 1

t-मूल्य	df	p-value
4.876	761	0.0000013

t-परीक्षण द्वारा परिकल्पना परीक्षण

टेबल – **2**

स्वतंत्र नमूना **t-परीक्षण** से दोनों समूहों के मध्य अंतर **सांख्यिकीय रूप से सार्थक (p < 0.05**) पाया गया। इससे स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर है। अतः **शोध परिकल्पना R1 स्वीकार** तथा **शून्य परिकल्पना H1 अस्वीकृत** की गई।

उद्देश्य–2 : **उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन**

शोध प्राकल्पना- R2

उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी परिक्षेत्र के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर होता है।

शून्य प्राकल्पना- H2

उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के औसत स्कोर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्राकल्पना परिक्षण और निष्कर्ष

इस उद्देश्य के अंतर्गत **437 ग्रामीण** एवं **326 शहरी** विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना की गई। ग्रामीण विद्यार्थियों का **माध्य (Mean) 86.30**, **SD 11.40**, जबकि शहरी विद्यार्थियों का **माध्य 87.55**, **SD 10.44** प्राप्त हुआ।

मानसिक स्वास्थ्य स्तर	ग्रामीण	प्रतिशत (%)	शहरी	प्रतिशत (%)
मानसिक अस्वस्थ	61	13.96	39	11.96
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	147	33.64	97	29.75
सामान्य मानसिक स्वास्थ्य	154	35.24	129	39.57
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	75	17.16	61	18.71
योग	**437**	**100.00**	**326**	**100.00**

ग्रामीण शहरी मानसिक स्वास्थ्य प्रतिशत तालिका

टेबल – **3**

t-मूल्य	df	p-value
-1.552	761	0.121

t-परीक्षण द्वारा परिकल्पना परीक्षण

टेबल – **4**

स्वतंत्र **t-परीक्षण** से दोनों समूहों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य में **असार्थक अंतर (p >0.05**) पाया गया। अतः **शोध परिकल्पना R2 अस्वीकृत** तथा **शून्य परिकल्पना H2 स्वीकृत** की गई।

उद्देश्य–3 : **उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन**

शोध प्राकल्पना- R3

उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च होता है।

शून्य प्राकल्पना- H3

उच्च प्राथमिक स्तर के बालको और बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

प्राकल्पना परिक्षण और निष्कर्ष

इस उद्देश्य के अंतर्गत 354 **बालकों** एवं 409 **बालिकाओं** के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना की गई। बालकों का **माध्य** (Mean) 89.79, SD 10.61, जबकि बालिकाओं का **माध्य** 84.28, SD 10.72 प्राप्त हुआ।

मानसिक स्वास्थ्य स्तर	बालक	प्रतिशत (%)	बालिका	प्रतिशत (%)
मानसिक अस्वस्थ	31	8.76	69	16.87
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	88	24.86	156	38.14
सामान्य मानसिक स्वास्थ्य	139	39.27	144	35.21
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	96	27.12	40	9.78
योग	**354**	**100.00**	**409**	**100.00**

बालक – बालिका प्रतिशत विवरण

टेबल – 5

t-मूल्य	df	p-value
7.123	761	0.00000000000245

t-परीक्षण द्वारा परिकल्पना परीक्षण

टेबल – 6

स्वतंत्र **t-परीक्षण** से दोनों समूहों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य में **सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर** ($p < 0.05$) पाया गया। परिणामों से स्पष्ट है कि बालकों का मानसिक स्वास्थ्य बालिकाओं की अपेक्षा बेहतर है। अतः **शोध परिकल्पना R3 स्वीकार** तथा **शून्य परिकल्पना H3 अस्वीकृत** की गई।

उद्देश्य–4 : **उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन**

शोध प्राकल्पना- R4

उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर होती है

शून्य प्राकल्पना- H4

उच्च प्राथमिक स्तर के बालको एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के औसत स्कोर में सार्थक अंतर नहीं है

प्राकल्पना परिक्षण और निष्कर्ष

इस उद्देश्य के अंतर्गत 354 **बालकों** एवं 409 **बालिकाओं** की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गई। बालकों का **माध्य** (Mean) 26.10, SD 6.93, जबकि बालिकाओं का **माध्य** 22.86, SD 6.12 प्राप्त हुआ।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in December 2025

बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक वर्गीकरण

शैक्षिक उपलब्धि स्तर	बालक (%)	बालिका (%)
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	12.99	19.32
सामान्य शैक्षिक उपलब्धि	64.12	70.90
उच्च (उत्तम) शैक्षिक उपलब्धि	22.88	9.78

टेबल – 7

t-परीक्षण द्वारा परिकल्पना परीक्षण

t-मूल्य	df	p-value
6.88	761	0.000000000013

टेबल – 8

स्वतंत्र **t-परीक्षण** द्वारा यह अंतर **सांख्यिकीय रूप से सार्थक (p < 0.05)** पाया गया। इससे स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं से बेहतर रही। अतः **शोध परिकल्पना R4 स्वीकार** तथा **शून्य परिकल्पना H4 अस्वीकृत** की गई।

उद्देश्य–5 : **विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन**

शोध प्राकल्पना R5

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है।

शुन्य प्राकल्पना H5

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

प्राकल्पना परिक्षण और निष्कर्ष

इस उद्देश्य के अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण **पियर्सन सहसम्बंध (Pearson Correlation)** तथा **रेखीय प्रतिगमन (Linear Regression)** द्वारा किया गया।

प्रतिगमन सूचकांक	मान
नमूना आकार (N)	763
R	0.625
R^2	0.391
F-मूल्य	488.082
p-मूल्य	p < 0.001

टेबल – 9

विश्लेषण से दोनों चरों के मध्य **धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसम्बंध (r > 0, p < 0.05)** प्राप्त हुआ। प्रतिगमन विश्लेषण में **F-परीक्षण भी सार्थक** पाया गया, जिससे सिद्ध हुआ कि

मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक (Predictor) है। अतः **शोध परिकल्पना R5 स्वीकार** तथा **शून्य परिकल्पना H5 अस्वीकृत** की गई।

5.1 चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य स्तर की प्राप्त हुई, किंतु शहरी विद्यार्थियों का प्रदर्शन ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर पाया गया। इसका प्रमुख कारण शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध बेहतर शैक्षिक संसाधन, सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँच, अभिभावकीय जागरूकता तथा विद्यालयी वातावरण हो सकता है। दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी एवं सामाजिक-आर्थिक सीमाएँ विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती हैं।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि बालकों का मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की अपेक्षा कुछ बेहतर है। यह परिणाम सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों की ओर संकेत करता है, जहाँ बालिकाओं पर पारिवारिक उत्तरदायित्व, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ एवं सामाजिक अपेक्षाओं का अतिरिक्त प्रभाव पड़ता है। फिर भी दोनों वर्गों के अधिकांश विद्यार्थी सामान्य स्तर में पाए गए, जो विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की सकारात्मक भूमिका को दर्शाता है।

तुलनात्मक विश्लेषण से ग्रामीण-शहरी तथा बालक-बालिका समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि निवास क्षेत्र एवं लिंग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारक हैं। सहसंबंध एवं प्रतिगमन विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्त्वपूर्ण पूर्वानुमानक है। अर्थात मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थी अध्ययन में अधिक एकाग्र, प्रेरित एवं सफल होते हैं। अतः विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन, परामर्श सेवाओं, जीवन-कौशल शिक्षा तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

5.2 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि एक-दूसरे के पूरक आयाम हैं। अध्ययन में अधिकांश विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य स्तर की पाई गई, जबकि मानसिक स्वास्थ्य भी मुख्यतः सामान्य स्तर का पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में विद्यार्थियों के प्रदर्शन में अंतर पाया गया, जिसमें शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य अपेक्षाकृत बेहतर रहे।

लिंग के आधार पर भी अंतर प्राप्त हुआ। बालकों का औसत मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि बालिकाओं की तुलना में कुछ अधिक रही, यद्यपि दोनों समूह सामान्य श्रेणी में सम्मिलित रहे। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के मानसिक एवं शैक्षिक विकास को प्रभावित करती हैं।

अध्ययन के तुलनात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि ग्रामीण-शहरी तथा बालक-बालिका समूहों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। साथ ही सहसंबंध विश्लेषण ने मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक संबंध स्थापित किया। प्रतिगमन विश्लेषण से यह भी प्रमाणित हुआ कि मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक उपलब्धि का प्रभावी पूर्वानुमानक है।

समग्रतः अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को भी समान महत्त्व दिया जाना चाहिए। विद्यालय, परिवार तथा समाज यदि संयुक्त रूप से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण एवं संवर्धन पर कार्य करें, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। इसलिए विद्यालयी शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों, परामर्श सेवाओं तथा जीवन-कौशल आधारित गतिविधियों को नियमित रूप से सम्मिलित किया जाना समय की आवश्यकता है।

5.3 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अतः विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में प्रशिक्षित परामर्शदाता (Counsellor) अथवा परामर्श कक्ष की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि विद्यार्थियों की भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समय पर समाधान किया जा सके।

ग्रामीण विद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों, डिजिटल सुविधाओं एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री का विस्तार आवश्यक है। साथ ही शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य, जीवन-कौशल शिक्षा एवं समावेशी शिक्षण के संबंध में नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। विद्यालयों में खेल, योग, ध्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है।

अभिभावकों को भी मानसिक स्वास्थ्य के महत्व से अवगत कराना आवश्यक है ताकि वे बच्चों पर अनावश्यक शैक्षिक दबाव न डालें तथा सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करें। विशेष रूप से बालिकाओं के आत्मविश्वास, सुरक्षा एवं नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु विद्यालय स्तर पर विशेष कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्राथमिकता देते हुए विद्यालयों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (Social Emotional Learning), जीवन-कौशल शिक्षा एवं सकारात्मक विद्यालयी संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि दोनों पर समान रूप से ध्यान दिया जाए तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव होगा तथा वे भविष्य में अधिक सक्षम, आत्मविश्वासी एवं उत्तरदायी नागरिक बन सकेंगे।

5.4 अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं। अध्ययन केवल गोरखपुर मंडल के चयनित उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा कक्षा 7 के विद्यार्थियों तक सीमित रहा, इसलिए इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण सभी विद्यालयों पर नहीं किया जा सकता। अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के अतिरिक्त अन्य प्रभावकारी कारकों, जैसे पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्थिति, बुद्धिलब्धि तथा व्यक्तित्व का विस्तृत विश्लेषण नहीं किया गया। अध्ययन में स्वनिर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी एवं उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया, जो समय एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न परिणाम दे सकते हैं।

5.5 भविष्य के लिए सुझाव

भविष्य में इस विषय पर व्यापक स्तर पर अनुसंधान किए जाने की आवश्यकता है। आगामी अध्ययनों में उत्तर प्रदेश के अन्य मंडलों तथा विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों को सम्मिलित कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। विभिन्न कक्षाओं, आयु-समूहों तथा विद्यालयों के प्रकार (सरकारी, सहायता प्राप्त

एवं निजी) के आधार पर भी अध्ययन किए जाने चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य के साथ पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्तर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-अवधारणा, अध्ययन-अभिरुचि तथा डिजिटल अधिगम जैसे कारकों का संयुक्त अध्ययन अधिक उपयोगी होगा। भविष्य में अनुदैर्ध्य (Longitudinal) तथा प्रयोगात्मक (Experimental) शोधों के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का परीक्षण किया जा सकता है। साथ ही विद्यालय आधारित परामर्श सेवाओं, योग, ध्यान, जीवन-कौशल शिक्षा तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु अधिक प्रभावी नीतियाँ एवं कार्यक्रम विकसित किए जा सकेंगे।

1. सन्दर्भ

2. अरौड़ा, र., एवं राजरानी. (2010). शिक्षा का मौलिक अधिकार: कुछ मुद्दे और कुछ चुनौतियाँ। *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, 6–15।
3. कौल, लौकेश. (2009). *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. कौर, ज., एवं कौर, एस. (2018). *स्कूली छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता*. परिपेक्स –इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च, *7*(6), 48–49.
5. कौर, ज., एवं राणा, जी. एस. (2009). सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की एकेडमिक उपलब्धि के संदर्भ में उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन। एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यू, *4*(12), 636–640.
6. कोठारी, सी. आर. (2004). *शोध पद्धति: विधियाँ और तकनीकें (दूसरा संस्करण)*. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
7. कोहेन, लुईस, मैनियन, लॉरेंस, एवं मॉरिसन, कीथ. (2007). *शिक्षा में शोध विधियाँ*. लंदन: रूटलेज।
8. कुलदीप. (2019). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, 5*(11), 284–284।
9. कुमार, म., एवं नामदेव, आर. प. (2024). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव। *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 45*(1), 78–90।
10. गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, अलका. (2008). *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकी विधियाँ*. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
11. गोमाथिलता, आर., एवं जीवरथिनम, के. वी. (2019). एक्टिव लर्निंग मेथड के प्रति अपर प्राइमरी स्टूडेंट्स का नज़रिया. पेरिपेक्स –इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च, 8(5), 59–60.
12. गोरखपुर जिला. *गोरखपुर का इतिहास* , उत्तर प्रदेश शासन। प्राप्ति स्रोत: https://gorakhpur.nic.in/history/
13. जहाँ, तबस्सुम, एवं आफ़ताब, स. (2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में सभी के लिए अधिगम। *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 45*(3), 43–51।
14. थापलियाल, पी. (2022). दिल्ली में सीनियर सेकेंडरी स्तर पर छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मेथड्स. *10*(7), 270–273.
15. तोमर, एस. के. (2015). सेकेंडरी स्कूलों में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में माता-पिता की भागीदारी की भूमिका पर एक अध्ययन. पेरिपेक्स –इंडियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च, *4*(5), 245–247.
16. त्रौहन, म., एवं शर्मा, स. क. (2006). ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध शिक्षा सुविधाएँ। *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 17*(3), 93–100।

17. दशे, द., एवं गोरे, र. (2024). प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 45*(3), 142–152।
18. दास, बी., एवं महापात्र, पी. (1989). *किशोरों में स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार और शैक्षणिक उपलब्धि.* नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
19. पटेल, म. (2024). विद्यालयी शिक्षा का आधार: विद्यालय प्रमुख। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* 52–61।
20. पटेल, वी. (2012). *टीचर्स का फीडबैक और टीचर ट्रेनिंग के बारे में उनकी ज़रूरतें। नई दिल्ली: ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।*
21. प्रसाद, स. (2006). पाठ्यपुस्तकें जीवन की समझ पैदा करती हैं। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* 87–91।
22. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू., एवं काह्न, जेम्स वी. (2006). *शिक्षा में शोध* (10वाँ संस्करण)। नई दिल्ली: प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया।
23. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
24. राय, पारस नाथ. (2007). *अनुसंधान परिचय.* आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
25. लाल, आर. बी. (2010). *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत।* मेरठ: रस्तोगी प्रकाशन।
26. लाल, आर. बी. (2013). *भारतीय शिक्षा का विकास एवं उनकी समस्याएँ।* मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन।
27. वर्मा, स. (2024). विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए नीतिगत प्रयास एवं उनका क्रियान्वयन। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* 66–76।
28. वशिष्ठ, के. सी. (2018). *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारंभिक शिक्षा।* आगरा: श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
29. शर्मा, अ. क., एवं मछाल, म. क. (2023). जीवनशैली मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* 30–38।
30. शर्मा, क. (2010). बाल श्रम की सामाजिक समस्या। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* 60–68।
31. श्रीवास्तव, र. (2010). वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिक्षा चिंतन की उपादेयता। *भारतीय आधुनिक शिक्षा।*
32. सक्सेना, एस. (2008). *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार।* आगरा: साहित्य प्रकाशन।
33. सिंह, अ. क. (2012). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में शोध विधियाँ.* पटना: मोतीलाल बनारसीदास।
34. सिंह, अ. क. (2018). *शिक्षा मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: भारती भवन।
35. यादव, स., एवं कुमार, अ. (2024). राष्ट्र निर्माण में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में उपादेयता। *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 32*(1), 24–31।